# अक्षय को थप्पड़ मारना आसान नहीं था : सौम्या

**फिल्म** 'धुरंधर' में सौम्या टंडन का किरदार भले ही सीमित स्क्रीन टाइम का हो, लेकिन उसकी मौजूदगी कहानी में गहरी छाप छोड़ती है. उन्होंने रहमान डकैत की पत्नी उल्फत के रूप में एक सशक्त और साहसी महिला को पर्दे पर उतारा है.

फिल्म का सबसे चर्चित सीन वही है, जिसमें वह सबके सामने अक्षय खन्ना को थप्पड़ मारती नजर आती हैं. सौम्या ने बताया कि इस सीन से पहले उनकी और अक्षय खन्ना की ज्यादा बातचीत भी नहीं हुई थी. दोनों के बीच केमिस्ट्री शब्दों से नहीं, बल्कि आंखों और सीन की गंभीरता से बनी. शुरुआत में सौम्या इस सीन को थोड़ा 'एक्टेड' तरीके से कर रही थीं, लेकिन डायरेक्टर आदित्य धर ने उन्हें सलाह दी कि सीन को बनावटी न बनाएं, बल्कि उसे पूरी ईमानदारी से निभाएं.

जब सौम्या ने अक्षय खन्ना से पूछा कि क्या वह सच में थप्पड़ मार सकती हैं, तो उन्होंने बिना झिझक हामी भर दी. सीन पूरा हुआ, कैमरा बंद हुआ, लेकिन सौम्या का मन भारी हो गया. उन्होंने स्वीकार किया कि थप्पड़ मारने के बाद उन्हें बहुत बुरा लगा और वह अंदर से डर गई थीं, लेकिन यही सीन फिल्म के लिए परफेक्ट साबित हुआ.

सौम्या ने यह भी खुलासा किया कि जब उन्होंने फिल्म साइन की थी, तब उन्हें पूरी स्क्रिप्ट नहीं सुनाई गई थी. फिल्म को सीक्रेट रखा गया था और उन्हें यह तक नहीं पता था कि 'धुरंधर' दो हिस्सों में बनेगी. उन्होंने यह रोल सिर्फ आदित्य धर पर भरोसे और उनके साथ काम करने की इच्छा के चलते किया.

# कलाकारों ने अपनी यादगार यात्राओं के बारे में बताया!

**2025** में एण्डटीवी के कलाकारों ने अपनी व्यस्त दिनचर्या से थोड़ा वक्त निकालकर दुनिया भर में घूमने का आनंद लिया. किसी ने नई जगहों के लाजवाब खाने का स्वाद चखा, किसी ने अपनी बहुप्रतीक्षित आध्यात्मिक यात्रा पूरी की, तो कुछ खेलों से जुड़ी खास यादें अपने साथ लेकर लौटे. स्क्रीन पर अपने किरदारों को जीवंत करने वाले ये कलाकार अब अपने सबसे यादगार सफर की यादें हमारे साथ साझा कर रहे हैं. इनमें शामिल हैं-प्रियंवदा कांत ('घरवाली पेड़वाली' की लतिका), आसिफ शेख ('भाबीजी घर पर हैं' के विभूति नारायण मिश्रा) और गीतांजलि मिश्रा ('हप्पू की उलटन पलटन' की राजेश). प्रियंवदा कांत, जो जल्द ही 'घरवाली पेड़वाली' में लतिका के रूप में नजर आएंगी, ने इस साल जापान की यात्रा की. अपने अनुभव बताते हुए उन्होंने कहा, 'जापान ने मेरा दिल जीत लिया! मुझे जापानी खाना हमेशा पसंद रहा है, लेकिन क्योटो में असली सुशी खाने का अनुभव बिल्कुल अलग था. हर दिन एक फूड एडवेंचर था-छोटे-छोटे रोमन कैफे, लाइव सुशी काउंटर और भीड़भाड़ वाली गलियों में छिपे प्यारे कैफे.

# श्रद्धा कपूर ने फिल्म 'धुरंधर' की तारीफ की

**बॉलीवुड** स्टार श्रद्धा कपूर ने फिल्म धुरंधर की तारीफ की है. फिल्म धुरंधर में रणवीर सिंह ,अक्षय खन्ना, संजय दत्त, आर. माधवन और अर्जुन रामपाल की अहम भूमिका हैं. यह हाई-ऑक्टेन एक्शन-थ्रिलर आदित्य धर द्वारा लिखित, निर्देशित और निर्मित है, और इसका निर्माण ज्योति देशपांडे और लोकेश धर ने किया है. जियो स्टूडियोज़ द्वारा प्रस्तुत, बी62 स्टूडियोज़ के प्रोडक्शन और सारेगामा के सहयोग से यह फिल्म बनी है.इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर धूम मचा दी और इसे दर्शकों से जबरदस्त रिस्पॉन्स मिल रहा है. वहीं दूसरी ओर फिल्म को कई सेलेब्स से भी लगातार प्रशंसा मिल रही है. इसमें श्रद्धा कपूर का नाम भी शामिल हो गया है. श्रद्धा कपूर ने इस फिल्म की तारीफ करते हुए दूसरे पार्ट के लिए भी अपनी उत्सुकता जाहिर की है.

श्रद्धा कपूर ने फिल्म धुरंधर की तारीफ करते हुए अपने इंस्टाग्राम पर कई स्टोरीज साझा कीं. अपनी स्टोरीज में उन्होंने लिखा, 'आदित्य धर का धुरंधर बनाना वाकई बुरा लग रहा है, क्योंकि दूसरे पार्ट के लिए हमें तीन महीने का इंतजार करवाया है. हमारी भावनाओं के साथ खिलवाड़ मत करो. कृपया इसे पहले रिलीज कर दो.'

श्रद्धा कपूर ने फिल्म धुरंधर की तारीफ करते हुए कहा कि क्या शानदार अनुभव रहा. यदि सुबह शूट नहीं होता तो अभी जाकर दोबारा देखती है. उन्होंने इस साल हिंदी सिनेमा को मिली हिट फिल्मों का जिक्र करते हुए कहा कि 'छावा', 'सैयारा' और 'धुरंधर' सभी 2025 के हिंदी सिनेमा में.

# 'टॉक्सिक' शब्द अब आम हो गया : कृति

**फिल्म** 'तेरे इश्क में' में कृति सेनन ने एक बेहद इमोशनल और संवेदनशील किरदार निभाया है. वह अपने किरदार मुक्ति के माध्यम से दर्शकों को यह दिखाती हैं कि कठिन रिश्तों और भावनात्मक निर्णयों का बोझ इंसान पर किस तरह असर डालता है. फिल्म में उनके किरदार ने विवादास्पद फैसले लिए, जिसमें उन्होंने अपने बच्चे को पति के पास देने का निर्णय किया, और इसके चलते उन्हें गहरा गिल्ट महसूस हुआ.

झकृति ने बताया कि उनके किरदार के लिए यह भावनात्मक यात्रा बहुत चुनौतीपूर्ण थी. हाल ही में दिए एक इंटरव्यू में कृति सेनन ने उन लोगों के सवालों पर प्रतिक्रिया दी, जिन्होंने फिल्म को 'टॉक्सिक' करार दिया. उन्होंने कहा कि आजकल 'टॉक्सिक' और 'रेड फ्लैग' जैसे शब्द बहुत कॉमन हो गए हैं. कृति ने समझाया कि फिल्म पर राय हमेशा सब्जेक्टिव होती है और यह हर दर्शक के नजरिए पर निर्भर करती है. उनका कहना है कि किसी भी निर्णय को सही या गलत मानने से पहले यह देखना जरूरी है कि इंसान की नीयत क्या थी और उसका दिल साफ था या नहीं. कृति ने अपने किरदार के अनुभवों का भी खुलासा किया. मुक्ति का गिल्ट इतना गहरा था कि वह अपनी ही दुनिया में बर्बाद हो गई.

कृति के मुताबिक, अगर कोई इंसान अपनी भावनाओं के हिसाब से पूरी तरह जिम्मेदार महसूस करता है, तो वह किसी भी फैसले से जुड़ी जिम्मेदारी को भारी महसूस कर सकता है. उन्होंने यह भी बताया कि उनकी फिल्म का मकसद सिर्फ मनोरंजन नहीं है, बल्कि रिश्तों और निर्णयों की जटिलताओं को दर्शाना है. वर्क फ्रंट की बात करें तो, कृति सेनन अगली बार 'कॉकटेल 2' में नजर आएंगी, जिसमें वह शाहिद कपूर और रश्मिका मंदाना के साथ काम कर रही हैं. इस फिल्म को लेकर भी दर्शकों में उत्सुकता बनी हुई है.

# मनीष पॉल ने 'वन' का शूटिंग शेड्यूल पूरा किया

**बॉलीवुड** में अपने कॉमिक अभिनय के लिये मशहूर अभिनेता और एंकर मनीष पॉल ने अपनी आने वाली फिल्म 'वन- फ़ोर्स ऑफ़ द फॉरेस्ट' का 2025 का शूटिंग शेड्यूल पूरा कर लिया है.

मनीष पॉल ने अपनी सोशल मीडिया अकाउंट पर अपनी बहुप्रतीक्षित लोक-पौराणिक थ्रिलर फिल्म 'वन - फ़ोर्स ऑफ़ द फॉरेस्ट' में निभा रहे अपने किरदार की एक तस्वीर के साथ इस वर्ष का शूटिंग शेड्यूल खत्म होने की खबर, अपने फैंस को दी है. मनीष पॉल ने अपने इंस्टाग्राम पर पोस्ट करते हुएलिखा है, 'यह 'वन' के लिए 2025 का शेड्यूल पूरा हो चुका है... वन आ रहा है... अब अगले शेड्यूल के लिए जनवरी 2026 में फिर से आने का बेसब्री से इंतजार है!'

भारतीय लोककथाओं और जंगल की कहानियों से प्रेरित फिल्म 'वन - फ़ोर्स ऑफ़ द फॉरेस्ट', बालाजी टेलीफिल्म्स और टीवीएफ मोशन पिक्चर्स की प्रस्तुति के साथ एक महत्वाकांक्षी लोक-पौराणिक थ्रिलर है, जो घने जंगल की पृष्ठभूमि पर बनी रहस्यों और सच्चाई से गुंथी हुई है. अरुणाभ कुमार और दीपक मिश्रा द्वारा निर्देशित फ़िल्म 'वन- फ़ोर्स ऑफ़ द फॉरेस्ट' में सिद्धार्थ मल्होत्रा और तमन्ना भाटिया के साथ स्क्रीन शेयर करने जा रहे मनीष पॉल फ़िल्म में एक अहम भूमिका निभा रहे हैं, जिससे फ़िल्म की स्टार कास्ट और भी मज़बूत हो गई है.

गौरतलब है कि 'वन' के अलावा, मनीष पॉल, डेविड धवन निर्देशित 'है जवानी तो इश्क होना है', में भी नज़र आने वाले हैं. ऐसे में यह कहें तो गलत नहीं होगा कि इस फिल्म के साथ मनीष अपने करियर के एक दलेर, डायनैमिक और करियर-डिफाइनिंग नए अध्याय में कदम रख रहे हैं.

# फिल्म किस किसको प्यार करूं 2 का नया गाना रिलीज

**जानेमाने** अभिनेता और एंकर कपिल शर्मा की फिल्म 'किस किसको प्यार करूं 2' का गाना 'आजा हलचल करेंगे' रिलीज हो गया है. 'किस किसको प्यार करूं 2' का गाना 'आजा हलचल करेंगे' रिलीज हो गया है. ऊर्जा, रोमांस और रंगीन जश्न से भरा यह गीत पहली बार पर्दे पर कपिल शर्मा और त्रिधा चौधरी की ताज़ा जोड़ी को पेश करता है, जिनकी केमिस्ट्री शरारती, युवा और बेहद सहज अंदाज़ में दिल जीत लेती है. अपनी बेहतरीन हास्य टाइमिंग के लिए मशहूर कपिल शर्मा इस गाने में अपनी चुलबुली मौजूदगी से जान डालते हैं, वहीं त्रिधा चौधरी अपनी सादगी, चमक और अपनापन जोड़कर इस जोड़ी को और भी ताज़ा और देखने लायक बना देती हैं.

इस गाने को आवाज़ गायिका अफसाना खान ने दी है.संगीतकार युग भुसाल ने आधुनिक धुनों को बॉलीवुड के त्योहारों वाले रंग में पिरोकर ऐसा संगीत रचा है, जो गाना खत्म होने के बाद भी मन में गूंजता रहता है. अजय कुमार के मज़ेदार और दिल से जुड़े बोल इस जश्न और रोमांस के मूड को खूबसूरती से पूरा करते हैं.

फिल्म 'किस किसको प्यार करूं 2' का पूरा एल्बम अब सभी मंचों पर उपलब्ध है और 'आजा हलचल करेंगे' अपनी सुकून देने वाली ऊर्जा और थिरकने पर मजबूर कर देने वाले अंदाज़ के लिए श्रोताओं का खूब प्यार बटोर रहा है.

# 'घरवाली पेड़वाली' ने मुंबई में निकाली अनोखी बारात

**रंग**-बिरंगी बस, धमाकेदार फ्लैश मॉब और अनोखी बारात ने 15 दिसंबर को शो के प्रीमियर से पहले बांधा समां एण्डटीवी अपने नए हल्के-फुल्के फैमिली कॉमेडी शो 'घरवाली पेडवाली' के लॉन्च से पहले मुंबई की सड़कों पर ऐसा नज़ारा लेकर आया, जिसे देखकर हर कोई दंग रह गया. शो के प्रमोशन के लिए चैनल ने पहली बार शहर की सड़कों पर एक भव्य और अनोखी बारात निकाली, जिसने मुंबई को रंग, संगीत और मस्ती से भर दिया.शो के मुख्य किरदार जीतू पांडे (पारस अरोड़ा) अपनी दो दुल्हनों-सावी (सीरत कपूर) और लतिका (प्रियंवदा कांत) के साथ एक सजी-धजी रंगीन बस में सवार होकर शहर के कई मशहूर इलाकों से गुज़रे. यह अनोखी बारात अंधेरी, जुहू, बांद्रा और वर्ली से होती हुई अमिताभ बच्चन के 'जलसा', शाहरुख खान के 'मन्नत', सलमान खान के 'गैलेक्सी अपार्टमेंट' और ईशा अंबानी के 'गुलिता' जैसे चर्चित ठिकानों के पास से गुज़री. रास्ते में लिंकिंग रोड, खूबसूरत बांद्रा-वर्ली सी लिंक और हाजी अली पर भी लोगों की भारी भीड़ जुट गई. इस बारात में शो की पूरी ऑन-स्क्रीन फैमिली, रिश्तेदार और ऑफिस के किरदार नजर आए. इनमें शामिल थे-जीतू के माता-पिता गीता पांडे (गीता बिष्ट) और रीता पांडे (ऋचा सोनी), रमेश पांडे (हर्ष वशिष्ठ), सुरेश पांडे (बृज भूषण शुक्ला), दादाजी (बबलू मुखर्जी), रितिका बुआ (प्रीति सहाय दुबे), पनौती मामा (अमिताभ घाणेकर), सावित्री (प्रियंवदा सिंह), टिल्लूमल (सुदीप सारंगी), लट्टू (विनायक सिंह) और पप्पी (लोटा तिवारी).

## कृषि जगत

# मूंगफली: ताकत, गर्माहट और सुरक्षा का देसी स्रोत

**मूंगफली** को सर्दियों का बेहद उपयोगी और पौष्टिक खाद्य पदार्थ माना जाता है. ठंड के मौसम में शरीर को अधिक ऊर्जा, गर्माहट और पोषण की जरूरत होती है, जिसे मूंगफली आसानी से पूरा करती है. यह सस्ती होने के साथ-साथ पोषक तत्वों से भरपूर होती है, इसलिए ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में इसे बड़े चाव से खाया जाता है. सर्दियों में मूंगफली का सेवन स्वास्थ्य के लिए कई तरह से लाभकारी साबित होता है.

मूंगफली शरीर को अंदर से गर्म रखने में मदद करती है. इसमें मौजूद स्वस्थ वसा (हेल्दी फैट) और प्रोटीन शरीर को ऊर्जा देते हैं और ठंड से बचाते हैं. ठंड के दिनों में कमजोरी, थकान और सुस्ती आम समस्या होती है, ऐसे में रोज़ थोड़ी मात्रा में मूंगफली खाने से ताकत बनी रहती है. यह मेहनत करने वाले लोगों, किसानों और मजदूरों के लिए खास तौर पर फायदेमंद मानी जाती है. स्वास्थ्य की दृष्टि से मूंगफली कई रोगों से बचाव में सहायक है. इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट और विटामिन-ई दिल को स्वस्थ रखने में मदद करते हैं और हृदय रोग के खतरे को कम करते हैं. मूंगफली खराब कोलेस्ट्रॉल को घटाने और अच्छे कोलेस्ट्रॉल को बढ़ाने में सहायक मानी जाती है. इसके नियमित सेवन से ब्लड प्रेशर संतुलित रहता है और हार्ट अटैक का जोखिम कम हो सकता है. इसके अलावा इसमें फाइबर की अच्छी मात्रा होती है, जो पाचन तंत्र को मजबूत बनाती है और कब्ज जैसी समस्या से राहत दिलाती है.

# सरसों की खेती से आत्मनिर्भर बनते किसान

**सरसों** की खेती भारत के किसानों के लिए एक परंपरागत लेकिन अत्यंत लाभकारी फसल मानी जाती है. यह रबी मौसम की प्रमुख तिलहनी फसल है, जिसकी मांग खाद्य तेल, पशु आहार और औद्योगिक उपयोग के कारण लगातार बनी रहती है. कम पानी में तैयार होने वाली यह फसल छोटे और मध्यम किसानों के लिए खास तौर पर फायदेमंद है. सरसों की खेती से किसानों को न केवल अच्छी आमदनी मिलती है, बल्कि मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने में भी मदद मिलती है.

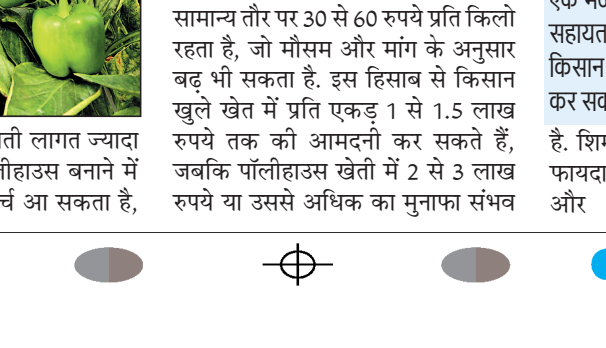

सरसों की खेती शुरू करने के लिए लागत अपेक्षाकृत कम आती है. प्रति एकड़ सरसों की खेती में लगभग 15 से 20 हजार रुपये का खर्च आता है, जिसमें बीज, जुताई, खाद, उर्वरक, सिंचाई और मजदूरी शामिल होती है. अगर किसान उन्नत किस्म के प्रमाणित बीजों का उपयोग करें तो उत्पादन और मुनाफा दोनों बढ़ सकता है. बीज की मात्रा सामान्यत: 2 से 3 किलो प्रति एकड़ पर्याप्त होती है.

सरकार की ओर से बीज और खाद पर कई राज्यों में अनुदान भी दिया जाता है, जिससे लागत और कम हो जाती है. उपज और मुनाफे की बात करें तो सरसों की औसत पैदावार 6 से 8 क्विंटल प्रति एकड़ होती है, जबकि उन्नत तकनीक अपनाने पर 10 क्विंटल या उससे अधिक उपज भी संभव है. बाजार में सरसों का भाव आमतौर पर 5,000 से 6,000 रुपये प्रति क्विंटल तक रहता है. इस हिसाब से किसान प्रति एकड़ 30 से 60 हजार रुपये तक की आमदनी कर सकते हैं. लागत घटाने के बाद 20 से 40 हजार रुपये तक का शुद्ध मुनाफा मिलना संभव है, जो रबी फसल के लिहाज से अच्छा माना जाता है.

सरसों की फसल की देखभाल ज्यादा कठिन नहीं होती. बुवाई अक्टूबर से नवंबर के बीच करनी चाहिए. समय पर बुवाई से फसल का विकास अच्छा होता है. पहली सिंचाई बुवाई के 25-30 दिन बाद और दूसरी सिंचाई फूल आने के समय करनी चाहिए. अधिक सिंचाई से फसल को नुकसान हो सकता है, इसलिए पानी का संतुलन जरूरी है. खाद और उर्वरक का सही मात्रा में उपयोग करें, खासकर नाइट्रोजन, फास्फोरस और सल्फर सरसों के लिए लाभकारी होते हैं. कीट और रोग प्रबंधन भी जरूरी है.

# मधुमक्खियों की देखभाल ही सफलता की कुंजी

**मधुमक्खी** पालन आज के समय में किसानों और ग्रामीण युवाओं के लिए कम लागत में अतिरिक्त आमदनी का एक बेहतरीन साधन बनता जा रहा है. शहद, मोम और पराग जैसे उत्पादों के साथ-साथ मधुमक्खियां फसलों के परागण में भी अहम भूमिका निभाती हैं, जिससे खेती की पैदावार बढ़ती है. लेकिन मधुमक्खी पालन में सफलता का सबसे बड़ा आधार उनकी सही देखभाल है.

थोड़ी सी लापरवाही पूरे छत्ते को नुकसान पहुंचा सकती है, इसलिए यह जानना जरूरी है कि मधुमक्खियों के लिए क्या करना चाहिए और क्या नहीं. मधुमक्खियों की देखभाल की शुरुआत सही स्थान के चयन से होती है. छत्तों को ऐसे स्थान पर रखना चाहिए जहां सुबह की हल्की धूप मिले और तेज हवा से बचाव हो. आसपास फूलदार फसलें, पेड़-पौधे और स्वच्छ पानी का स्रोत होना बहुत जरूरी है. छत्तों को जमीन से कुछ ऊंचाई पर रखें ताकि नमी और कीड़ों से बचाव हो सके. नियमित रूप से छत्तों की जांच करना भी जरूरी है, जिससे रानी मधुमक्खी की स्थिति, अंडे देने की प्रक्रिया और शहद के भंडारण पर नजर रखी जा सके. मधुमक्खियों के लिए स्वच्छ वातावरण सबसे जरूरी होता है.

छत्तों के आसपास जहरीले कीटनाशकों का प्रयोग नहीं करना चाहिए, क्योंकि इससे मधुमक्खियों की मृत्यु हो सकती है. अगर खेतों में दवा का छिड़काव जरूरी हो तो शाम के समय करें, जब मधुमक्खियां छत्ते में लौट आती हैं. छत्तों को बार-बार बिना कारण खोलना भी नुकसानदायक होता है, इससे मधुमक्खियां तनाव में आ जाती हैं और छत्ता छोड़ सकती हैं.

मधुमक्खी पालन में साफ-सफाई और धैर्य सबसे अहम है. गंदगी, नमी और लापरवाही से बीमारियां तेजी से फैलती हैं. बीमार छत्तों को अलग रखें और समय पर उपचार करें. सबसे जरूरी बात यह है कि मधुमक्खियों के साथ छेड़छाड़ न करें और उनके प्राकृतिक व्यवहार को समझें. सही देखभाल, मौसम के अनुसार प्रबंधन और सावधानियों के साथ मधुमक्खी पालन न केवल सुरक्षित बल्कि स्थायी आमदनी का मजबूत साधन बन सकता है.

# आधुनिक खेती का सफल मॉडल : शिमला मिर्च से लाखों की आमदनी

**शिमला** मिर्च की खेती आज के समय में किसानों के लिए एक लाभकारी विकल्प बनकर उभर रही है. यह एक ऐसी सब्ज़ी है जिसकी मांग पूरे साल बनी रहती है, खासकर शहरों, होटलों, रेस्टोरेंट और सब्ज़ी मंडियों में. अच्छे दाम मिलने के कारण किसान कम जमीन में भी बेहतर कमाई कर सकते हैं. बदलते मौसम और खेती के आधुनिक तरीकों के साथ शिमला मिर्च की खेती पारंपरिक फसलों की तुलना में ज्यादा मुनाफा देने वाली साबित हो रही है. अगर शिमला मिर्च की खेती शुरू करने की लागत की बात करें तो यह खेती के तरीके पर निर्भर करती है.

खुले खेत में खेती करने पर प्रति एकड़ लगभग 40 से 50 हजार रुपये का खर्च आता है, जिसमें बीज, खाद, कीटनाशक, सिंचाई और मजदूरी शामिल होती है. वहीं अगर किसान पॉलीहाउस या ग्रीनहाउस में

खेती करते हैं तो शुरुआती लागत ज्यादा होती है. एक एकड़ पॉलीहाउस बनाने में कई लाख रुपये तक खर्च आ सकता है, हालांकि इस पर सरकार की ओर से 50 से 70 प्रतिशत तक सब्सिडी भी मिलती है, जिससे किसानों का आर्थिक बोझ कम हो जाता है. उत्पादन की बात करें तो खुले खेत में शिमला मिर्च की उपज लगभग 80 से 120 क्विंटल प्रति एकड़ हो सकती है. वहीं पॉलीहाउस में नियंत्रित वातावरण मिलने से यह उपज 200 से 250 क्विंटल प्रति एकड़ तक पहुंच जाती है.

बाजार में शिमला मिर्च का भाव सामान्य तौर पर 30 से 60 रुपये प्रति किलो रहता है, जो मौसम और मांग के अनुसार बढ़ भी सकता है. इस हिसाब से किसान खुले खेत में प्रति एकड़ 1 से 1.5 लाख रुपये तक की आमदनी कर सकते हैं, जबकि पॉलीहाउस खेती में 2 से 3 लाख रुपये या उससे अधिक का मुनाफा संभव है. शिमला मिर्च की खेती का सबसे बड़ा फायदा यह है कि इससे किसानों को जल्दी और लगातार आमदनी मिलती है.

शिमला मिर्च की खेती में कुछ चुनौतियां भी हैं. बाजार में दामों का उतार-चढ़ाव, कीट-रोग का खतरा और पॉलीहाउस में तकनीकी जानकारी की जरूरत प्रमुख समस्याएं हैं. लेकिन सही प्रशिक्षण, वैज्ञानिक तरीकों और बाजार की जानकारी के साथ इन चुनौतियों से निपटा जा सकता है. कुल मिलाकर शिमला मिर्च की खेती किसानों के लिए आय बढ़ाने का एक मजबूत साधन है. सही योजना, सरकारी सहायता और आधुनिक तकनीक अपनाकर किसान इस खेती से अच्छी और स्थायी कमाई कर सकते हैं.